

## मूंग की खेती

मूंग एक प्रमुख फसल है। इसका वानस्पतिक नाम बिगना सैडिएटा है। यह लेग्यमिनेसी कुल का पौधा है तथा इसका जन्म स्थान भारत है। मूंग के दानों में 25% प्रोटीन, 60% कार्बोहाइड्रेट, 13% वसा तथा अल्प मात्रा में विटामिन सी पाया जाता है।

### जलवायु

मूंग की फसल सभी मौसमों में उगाई जाती है, उत्तरी भारत में इसे वर्षा (खरीफ) तथा (ग्रीष्म) ऋतु में उगाते हैं, दक्षिणी भारत में मूंग को रबी मौसम में उगाते हैं, इसकी फसल के लिए अधिक वर्षा हानिकारक होती है, ऐसे क्षेत्रों में जहाँ 60-75 सेमी तक वार्षिक वर्षा होती है मूंग की खेती के लिए उपयुक्त है पर, मूंग की फसल के लिए गर्म जलवायु की आवश्यकता पड़ती है, मूंग की खेती समुद्र तल से 2000 मीटर की ऊंचाई तक की जा सकती है, पौधों पर फलियाँ आते समय तथा फलियाँ पकते समय शुष्क मौसम तथा उच्च तापक्रम अधिक लाभप्रद होता है।

### भूमि

**भूमि का चुनाव** - इसकी खेती विभिन्न प्रकार की मृदाओं जैसे हल्की से भारी मिट्टी पर की जाती है, उत्तरी भारत में गहरी उचित जल निकास वाली दोमट व दक्षिणी भारत की लाल मृदाएँ उपयुक्त हैं जिनमें दोमट मिट्टी अच्छी मानी जाती है लेकिन सिंचाई का अच्छा प्रबंध होना आवश्यक है।

**भूमि की तैयारी** - रबी की फसल काटने के तुरंत बाद पलेवा करना चाहिए, खेत में ओट आने पर एक जुताई तथा बाद की जुताई मिट्टी पलटने वाले तवेदार हरो तथा दूसरी जुताई देशी हल अथवा कल्टीवेटर से करके भली-भाँती पाटा लगाना चाहिए ताकि खेत समतल हो जाए और अधिक नमी बनी रहे।

### प्रजातियाँ

**टाइप 1** - फसल अवधि 60-65 दिन, पौधे सीधे बढ़ने वाली, फली लम्बी, दाने हरे रंग के व मध्यम आकार के, हरी खाद एवं दाने के लिए प्रयोग करते हैं। उपज क्षमता 6-7 विव / 0 हैक, गमियाँ में बोवाई के लिए उपयुक्त।

**44 टाइप** - फसल अवधि 60-70 दिन, हरी खाद के लिए उपयुक्त, ग्रीष्म व वर्षा ऋतु के लिए उत्तम, पौधा अध फलने वाला, पीला मोजैक वायरस रोग लगता है, सम्पूर्ण भारत वर्ष के लिए उपयुक्त, उपज क्षमता 6-8 विव / 0 हैक।

**51 टाइप** - फसल अवधि 75-80 दिन, पौधा सीधा बढ़ने वाला व लंबा, दाना मध्यम आकार का एवं चमकौला हरे रंग का, उपज क्षमता 6-12 हैक विव /, देश के मैदानी क्षेत्रों में मुख्यतः खरीफ में मिलाव खेती के लिए उत्तम।

**16 पी एस** - फसल अवधि 60-65 दिन, पौधा सीधा बढ़ने वाला व लंबा, उपज क्षमता 10-12 विव / 0 हैक, सम्पूर्ण भारत में वर्षा तथा ग्रीष्म दोनों मौसमों के लिए उपयुक्त।

**मोहिनी** - फसल अवधि 70-75 दिन, पौधा सीधा फैलने वाला तथा शाखाएं युक्त, प्रत्येक फली में 10-12 बीज, दाने छोटे, उपज 10-12 विव / 0 हैक पीला मोजैक वायरस व सक्स्पेरा लीफ स्पॉट रोग के प्रति सहनशील क्षमता।

**शीला** : फसल अवधि 75-80 दिन, पौधा सीधा बढ़ने वाला व लंबा, उपज क्षमता 15-20 विव / 0 पूरे उत्तर प्रदेश के मौसम के लिए उपयुक्त।

**पन्त मूंग 1** - फसल अवधि 75 दिन (खरीफ) तथा 65 (जायद) दिन, दाने छोटे, उपज क्षमता 10-12 क्विटल/ हैक।

**एम् एल 1** - फसल अवधि 90 दिन, बीज छोटा व हरे रंग का, उपज क्षमता 8-12 विव / 0 हैक, पंजाब तथा हरियाणा में खेती के लिए उपयुक्त।

**एम् एल 5** - फसल अवधि 80-85 दिन, उपज क्षमता 10-12 विव / 0 हैक, खरीफ की फसल के लिए उपयुक्त, पौधे सीधे बढ़ने वाले तथा फलियाँ से लदा होता है, पीला मोजैक रंग कम लगता है।

**वषा** - यह अगेती किस्म है, पौधा छोटा तथा झाड़ीनुमा होता है, उपज क्षमता 10 विव / 0 हैक, यह किस्म हरियाणा से विकसित की गई है।

**सुनैना** - फसल अवधि 60 दिन, पौधा अध सीधा बढ़ने वाला, बीज चमकौला तथा हरे रंग का, उपज क्षमता 12-15 हैक विव /, बिहार में ग्रीष्म मौसम के लिए उपयुक्त।

**45 जवाहर** - इस किस्म को हाइब्रिड 45 भी कहा जाता है, फसल 75-85 दिन अवधि, पौधा अध सीधा बढ़ने वाला, उपज

क्षमता 10-13 कवन / 0 हैक , खरीफ के मौसम के लिए उपयुक्त ।

**11 कृष्णा** - अगेती किस्म फसल अवधि 65-70 दिन , खालियर क्षेत्र के लिए उपयुक्त उपज क्षमता 10-12 विवं / 0 हैक ।

**पन्त मूंग 3** - फसल अवधि 60-70 दिन , 1000 दाने का वजन 35 ग्राम , ग्रीष्म ऋतू म खेती के लिए उपयुक्त , पीला मोजैक वायरस तथा पाउडरी मिट्टी रोधक , पौधे का ऊंचाई 50-60 सेमी 0, 9-11 दाने प्रति फली ।

**पी.डी. 54 एम्:** - फसल अवधि 60-65 दिन, पीला वायरस मोजैक रोग रोधक , उपज क्षमता 12-15 हैक विवं / , बीज बड़ा व चमकोला हरे रंग का ।

**अमृत** - फसल आधी 90 दिन , इस किस्म का खेती बिहार म खरीफ मौसम म का जाती है , पीला मोजैक वायरस रोग के प्रति सहनशील , उपज क्षमता 10-12 विवं / 0 हैक ।

### बीज बोवाई

**बीजदर** - खरीफ मौसम म बीजदर 12-15 45 किग्रा प्रति हैक्टियर प्रयोग करते ह तथा बोवाई पंक्तियों म सेमी का दूरी पर करना चाहिए , रबी तथा ग्रीष्म मौसम म मूंग के लिए बीजदर 20 किग्रा / हैक रखना चाहिए तथा बोवाई कतारों म 30 सेमी का दूरी पर करनी चाहिए ।

**बोवाई का समय** - खरीफ मौसम म मूंग का बोवाई मानसून आने पर जून के द्वितीय पखवाड़े से जुलाई के प्रथम पखवाड़े के मध्य करना चाहिए . रबी मौसम म मूंग का बोवाई - अक्टूबर नवंबर म करनी चाहिए । दक्षिणी भारत म मध्य प्रदेश , तमिलनाडु व उड़ीसा म मूंग का बोवाई रबी मौसम म भी का जाती है । उत्तर प्रदेश , पंजाब , हरियाणा , दिल्ली , पश्चिम बंगाल तथा बिहार म मूंग का खेती ग्रीष्म मौसम म का जाती है । इन राज्यों म मूंग को गन्ना , गेहं , आलू आदि का कटाई के बाद बोते ह , इन राज्यों म ग्रीष्म ( बसंत ) मौसम म मूंग का बोवाई मध्य आचं से अप्रैल तक का है जाती ।

### खाद

अच्छी उपज लेने के लिए भूमि म कम से कम 35-40 विवंटल गोबर का अच्छे तरीके से सड़ी हुई खाद 50 किलो ग्राम नीम का खली और 50 किलो अरंडी का खली आदि इन सब खादों को अच्छी तरह मिलाकर खेत म बुवाई से पहले इस मिश्रण को समान मात्रा म बिखेर ल इसके बाद खेत म अच्छी तरह से जुताई कर खेत को तैयार कर इसके उपरांत बुवाई कर ।

**बीजोपचार** - 20-40 ग्राम जैविक खाद 1 किलो प्रायः ग्राम बीज के उपचार के लिए पयाप्त होती है . पहले गुड या चीनी को गम पानी म घोलकर 10% का घोल बनाया जाता है तथा इसे ठंडा होने दिया जाता है । तत्पश्चात इस गुड के घोल म जैविक खाद तथा बीज अच्छी तरह से मिला लेते ह ताकि बीजों पर एक पत बन जाए , बीज को छाया म सुखाते ह . दलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाने के लिए तथा लागत को कम करने के लिए इस प्रकार का जैविक खाद का प्रयोग - दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है । इससे वातावरण का नुवसान नहीं होता है , न तो ये जल म घुलकर अन्य उवरक का तरह जल को प्रदूषित करते ह और न ही वायु को प्रदूषित करते ह वरन इसके साथ - साथ फसल चक्र म उपयोग का जाने वाली बाद का फसल को भी पहंचता लाभ है . इसीलिये इन्हें पयावरण मित्र कहा जाता है ।

### सिंचाई

मूंग का ग्रीष्मकालीन फसल को 4-6 सिंचाइयों का आवश्यकता पड़ती है , वर्षाकालीन फसल म सूखा पड़ने का स्थिति म आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए जब फसल पूर्ण पुष्प अवस्था पर हो तो उस समय कोई भी सिंचाई नहीं करना चाहिए ।

**खरपतवार नियंत्रण** दाने वाली फसल का निराई - गुड़ाई , बोवाई के 20-25 दिन बाद करना आवश्यक है , दूसरी निराई गुड़ाई बोवाई के 45 दिन बाद करनी चाहिये ।

### मूंग का फसल म लगने वाले प्रमुख रोग

**पीला मोजैक** - इस रोग के कारण नई पत्तियाँ पीली हो जाती ह , पत्तियों का शिराओं का किनारा पीला पड़ जाता है और बाद म पूरी पत्ती ही पीली पड़ जाती है . यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है ।

**चारकोल विगलन** - रोग का प्रमुख लक्षण पौधों का जड़ों तथा तनों का विगलन ( सडन ) है इस .

**वण चित्ती** - इसके लक्षण पत्तियों पर प्रायः वृत्ताकार व्यास के धब्बे से प्रकट होते ह , कभी - कभी रोगग्रस्त भागों के साथ म मिलने से बड़ा अनियमित आकार का धब्बा बन जाता है , धब्बों का रंग बगनी लाल तथा भूरा है होता , फलियों पर भी इसका असर आ

जाता है।

**रोग नियंत्रण:** बीमारी आने पर इलाज करने से अच्छा है को बीमारी आने ही न द इसलिए किसान को फसल म हर 15 दिन बाद नीम पानी माइक्रो झाइम मिलाकर छिडकाव करते रहना चाहिए . अगर रोग आ ही गया है तो उस फसल को तत्काल उखाड़कर जला देना चाहिए और तत्काल हर हफ्ते नीम पानी का छिडकाव करते रहना चाहिए जब तक फसल रोगमुक्त न हो जाए। रोगमुक्त, विषमुक्त और तंदुरुस्त बीज को बोवनी करनी चाहिए।

### **मूंग को फसल म लगने वाले प्रमुख कोट**

**फली बेधक** - फली बेधक कोट इस फसल का प्रमुख कोट है , इस कोट को सूड़ियाँ फलियाँ म दाना पड़ते समय फली म दाना पड़ते समय फली म छेद करके दाने को खा जाती ह।

### **कोट नियंत्रण**

5 लीटर देशी गाय का मठा लेकर उसमे 15 चने के बराबर हाँग पीसकर घोल द, इस घोल को बीजा पर डालकर भिगो द तथा 2 घंटे तक रखा रहने द उसके बाद बोवाई कर . यह 1 एकड़ घोल को बोवनी के बीजा के लिए पर्याप्त है।

- 5 देशी गाय के गौमूत्र म बीज भिगोकर उनको बोवाई कर , ओगरा और दीमक से पौधा सुरक्षित रहेगा लीटर।
- ओगरा या दीमक से बचाव हेतु बोवाई करने से पहले बीजा को कैरोसिन से उपचारित कर।
- 250 मिली नीम ( नीम पानी बनाने के लिए 25 किलो नीम को पत्तियों को अच्छी तरह से पीसकर 50 लीटर पानी म तब तक उबाल जब तक को 20-25 पानी लीटर न रह जाए पानी , उसके बाद उसे उतारकर छानकर उपयोग कर ) को 25 मिली माइक्रो झाइम साथ अच्छी तरह मिलाकर उपयोग कर एवं सुपर 1 गोल्ड मैन्नीशियम 1 किग्रा 45 रु प्रति बैग 200 लीटर पानी म घोलकर माइक्रो झाइम के साथ मिलाकर अच्छी तरह से - तर बतर कर छिडकाव कर।
- 500 ग्राम लहसुन, 500 ग्राम तीखी हरी मिच लेकर बारीक पीसकर 150-200 लीटर पानी म घोलकर फसल पर छिडकाव कर इससे इल्ली. रस चूसक कोड़े नियंत्रित होंगे।
- बेशरम के पते 3 किलो एवं धतूरे के फल तोड़कर 3 3 लीटर पानी म उबाल, आधा पानी शेष बचने पर उसे छान ल, इस पानी म 500 ग्राम चने डालकर उबाल. ये चने चूहा के बिलों के पास शाम के समय डाल द , इससे चूहा से निजात मिलेगी।

### **कटाई**

मूंग को फलियाँ गुच्छों म लगती ह , पूरी फसल म फलियाँ को 2-3 बार म तोड़ लिया जाता है।

### **उपज**

वर्षाकालीन फसल से 10-12 विंव / 0 हैक तथा ग्रीष्मकालीन फसल 12-15 हैक विंव / तक म दाने को उपज प्राप्त हो जाती है।

### **भंडारण**

दाने को अच्छी प्रकार सुखाकर जब उसमे नमी का प्रतिशत 10-12 रह जाए तब इसे भण्डार म रखना चाहिए।